ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

ईदगाह कहानी के पात्र बालक हा मदके जीवन पर प्रकाश

Dr Kamna Kaushik
Associate Professor Hindi, Vaish College Bhiwani

आधुनिक हिन्दी कहानी के पतामहऔर उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी का जन्म सन् 1880 में बनारस के निकट लमही नामक गाँव में एक साधारण कायस्थ परिवार में हुआ था ।बचपन का इनका नाम धनपत राय था । प्रेमचंद को नवाब राय और मुंशी प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है।इनके दादाजी गुर सहाय राय जो क़ पटवारी थे और पताअजायब राय पोस्ट मास्टर थे ।बचपन से ही इनका जीवन बहुत ही, संघर्षो से गुजरा था। पताजीडाक वभागमें ल पक्के पद पर कार्यरत थे ।माता जी आनंदी देवी का स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था ।मात्र पाँच वर्ष की आयु में ही माता वहीनहो गए अर्थात् इनकी स्वर्गवासी हो गई ।कुछ समय बाद पताजीने दूसरा ववाहकर लया. सौतेली माता ने कभी प्रेमचंद जी को, पूर्ण रूप से नही अपनाया ।मात्र 14 वर्ष की अवस्था में ही इनके पताजी भी स्वर्गवासी हो गए।परिवार का सारा दायित्व इनकी कंधों पर आ गया जिसके कारण सोलह वर्ष की आयु में ही ही नौकरी करनी पड़ गई ।मदरसा मे रह कर, इन्होंने हिन्दी के साथ उर्दू व थोडा बहुत अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान प्राप्त कया।स्नातक की पढ़ाई के लये, बनारस के एक कालेज मे दा खला लया जैसे-तैसे 1919 मे फरसे अध्ययन कर बी.ए की डग्रीप्राप्त करी ।प्रेमचंद जी का उनकी मर्जी के बिना पन्द्रह वर्ष की उम्र मे स्वभाव मे बहुत ही झगड़ालू प्रवति की और, बदसूरत कन्या से हुआ ।प्रेमचंद की प्रथम पत्नी से, उनकी बिल्कुल नही जमती थी जिसके चलते उन्होंने उसे तलाक दे दिया. और कुछ समय गुजर जाने के बाद, अपनी पसंद से दूसरा ववाह, लगभग पच्चीस साल की उम्र मे एक वधवास्त्री से कया. प्रेमचंद जी का दूसरा ववाहबहुत ही संपन्न रहा उन्हें इसके बाद, दिनों दिन तरक्की मलतीगई ।

अध्यापक की नौकरी से डप्टीइंस्पेक्टर के पद तक का सफ़र इन्होंने तय कया।देशभक्ति की भावना इनमें कूटकर भरी हुई थी ।ये अत्यंत स्वा भमानीथे।अपने स्वा भमानके कारण और राष्ट भक्ति के कारण इन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और राष्ट्रपति गांधीजी के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लया।उनकी पहली हिन्दी कहानी सरस्वती पत्रिका के दिसम्बर अंक में १९१५ में सौत नाम से प्रका शतहुई और १९३६ में अंतिम कहानी कफन नाम से प्रका शतहुई।इन्होंने ताउम्र साहित्य सेवा से समाज सुधार में अपना योगदान दिया । इनके पुत्र हिन्दी के प्र सद्धसाहित्यकार अमृतराय ने मुंशी प्रेमचंद जी को कलम का सपाहीनाम दिया था।इन्होंने आजी वकाके लएस्वतंत्र लेखन को अपनाया और जीवन संघर्ष करते हुए 8 अक्टूबर सन् 1936 में यह महात्मा इस संसार को शारीरिक रूप से अल वदाकहकर अपनी रचनाओं के माध्यम से सदैव के लएअजर- अमरता

हो गए। प्रारम्भ में इन्होंने जब लेखन कार्य प्रारंभ कयाथा तब वे उर्दू भाषा में अपना लेखन कार्य करते थे ,बाद में में धीरे -धीरे हिन्दी में लखनेलगे थे ।प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का वकास कयाजिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन कया। मृणाल सेन ने प्रेमचंद की कहानी कफ़न पर आधारित ओका ऊरी कथा नाम से एक तेलुगू फ़ल्मबनाई जिसको सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़ल्मका राष्ट्रीय पुरस्कार भी मला।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

इनका योगदान अतुलनीय -अ वस्मरणीयहै।इन्होंने अपने जीवन में साहित्य की व भन्नवधाओंपर क़लम चलायी ।इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार से है:-

नाटक:-संग्राम(1923),कर्बला(1924)

प्रेम की वेदी (1933)

उपन्यास:-सेवा सदन ,वरदान, रंगभू मकर्मभू म,ग़बन निर्मला ,गोदान, कायाकल्प, प्रेमाश्रम इत्यादी

कहानियाँ:-अन्धेर , अनाथ लड़की अपनीकरनी ,अमृत ,अलग्योझा,आ ख़रीतोहफ़ा ,आ खरीमंजिल , आत्म-संगीत

आत्माराम, दो बैल की कथा ,आल्हाइज्जत का खून ,इस्तीफा

ईदगाह ,ईश्वरीय न्याय ,उद्धार

एक ऑंच की कसर , एक्ट्रेस , कप्तान साहब , कर्मों का फल , क्रकेटमैच, कवच ,क़ातिल , कोई दुख न हो तो बकरी खरीद ला ,कौशल ,खुदी ,गैरत की कटार ,गुल्ली डण्डा , घमण्ड का पुतला ,ज्योति , जेल ,जुलूस , झांकी ठाकुर का कुआं ,तेंतर ,त्रिया-चरित्र

तांगेवाले की बड़ ,तिरसूल ,दण्ड ,दुर्गा का मन्दिर ,देवी , देवी - एक और कहानी,नेकी , नब्री का नीति-निर्वाह ,नरक का मार्ग ,नैराश्य , नैराश्य लीला ,नशा ,नसीहतों का दफ्तर, नाग-पूजा ,नादान दोस्त , निर्वासन ,पंच परमेश्वर ,पत्नी से पति ,पुत्र-प्रेम ,पैपुजी , प्रतिशोध , प्रेम-सूत्र पर्वत-यात्रा , प्रायश्चित, परीक्षा, पूस की रात ,बैंक का दिवाला ,बेटों वाली वधवा, बड़े घर की बेटी , ,बड़े बाबू ,बड़े भाई साहब ,बन्द दरवाजा ,बाँका जमींदार बोहनी , मैकू , मन्त्र ,मन्दिर और मस्जिद

मनावन , मुबारक बीमारी , ममता

माँ , माता का ह्रदय , मलाप

मोटेराम जी शास्त्री , स्र्वग की देवी

राजहठ , राष्ट्र का सेवक , लैला

वफ़ा का ख़जर , वासना की क ड़याँ

वजय, वश्वास,शंखनाद , शूद्र

शराब की दुकान , शान्ति , शादी की वजह ,शान्ति सभ्यताओं का रहस्य

, समर यात्रा सौत ,होली की छु ीनम क का दरोगा ,गृह-दाह ,स्त्री और पुरूष

स्वांग सैलानी बन्दर ,स्वा मनी, सर्फएक आवाज, सोहाग का शव ,सौत ,ग्रह-दाह इत्यादि ।

मुंशी प्रेमचंद द्वारा र चतकहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में संक लतहैं ।इन्होंने अपने जीवन में लगभग तीन सौ कहानियाँ लखी।अपनी कहानियों में अपने युग के व भन्नरंगों को उकेरा है ।ये अपने युग के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार हैं ।इन्होंने अपनी कहानियों में जीवन के व वधपहलुओं का व भन्नपरिस्थितियों के अंतर्गत ववेचन ववेचन कयाहै ।ईदगाह का कहानी मुंशी प्रेमचंद जी द्वारा र चतएक सुप्र सद्धकहानी है ।इसमें एक मुस्लिम परिवार की आ र्थकस्थिति का यथार्थ चत्रांकनप्रस्तुत करते हुए लेखक ने ईद के पावन पर्व के महत्व को

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

उजागर करने का प्रयास कयाहै । दादी अमीना का संसार में बालक हा मदके अतिरिक्त कोई नहीं है बालक हा मददादी माँ के जीवन का सहारा है ।बालक हा मदके चरित्र चत्रणद्वारा बालक का दादी माँ के प्रति स्नेह भाव चत्रित कयागया है ।कहानी का कथानक प्रारंभ से अंत तक जब हम अध्ययन करते हैं तो हम देखते हैं कहानी में दादी अमीना और बालक हा मदये दोनों ही प्रमुख पात्र उभर कर आते हैं और इन दोनों का भी जब हम तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो हम देखते हैं कबालक हा मदही है जो कथानक के उद्देश्य को सार्थकता प्रदान करता है ।बालक हा मदके चरित्र चत्रणकी वशेषताएँइस प्रकार से हैं:-

हामीद के अब्बाजान -अम्मीजान दोनों ही अल्लाह को प्यारे हो गए थे । हा मदका पालन पोषण उसकी बूढ़ी दादी अमीना कर रही थी ।अमीना के घर में कोई भी कमाने वाला नहीं था। बालक हा मदके पालन पोषण - भरण पोषण के लएदादी अमीना दूसरों के कपड़े सलनेका काम करती थी ।दादी अमीना के घर की आ र्थकस्थिति अच्छी नहीं थी ।ग़रीबी में ही वह अपने बच्चे हा मदका पालन पोषण कर रही थी । दादी अमीना ईदगाह पर हा मदकी इतनी दूर पैदल चलने की बात सोचकर डर जाती है , चन्तितहो जाती हैं । वह मन ही मन सोचती है क हामीद के जूते भी फटे हुए है ,वह भी उसे गोद लेकर नहीं जा सकती क्यों कयदि वह उसे ख़ुद लेकर जाती है तो त्योहार पर से वयाकौन पकाएगा ?दाढ़ी अमीना की इसी दयनीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लेखक लखतेहैं क-

“अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हा मदका बाप अमीना के सवा और कौन है! उसे कैसे अकेले मेले जाने दे? उस भीड़-भाड़ से बच्चा कहीं खो जाय तो क्या हो? नहीं, अमीना उसे यों न जाने देगी। नन्ही-सी जान! तीन कोस चलेगा कैसे? पैर में छाले पड़ जायेंगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद में ले लेती, ले कनयहाँ सेवैयाँ कौन पकायेगा? पैसे होते तो लौटते-लौटते सब सामग्री जमा करके चटपट बना लेती।”

हा मदअत्यंत भावुक बालक है ।वह अपनी दादी हमीना पर पूर्ण वश्वासकरता है ।वह इतना भोला- मासूम है उसे यह तक नहीं पता कउसके अब्बाजान और अम्मीजान का देहांत हो चुका है ।दादी अमीना ने उसे बता रखा है कउसके अब्बाजान-अम्मीजान शहर गए हैं और वहाँ से ढेर सारे रुपये कमाकर लाएंगे ।बालक हा मदकल्पना में रहता है और वह कल्पना की उड़ान भरता रहता है ।जब उसके अब्बाजान-अम्मीजान ढेर सारी रुपये कमाकर लाएंगे तो वह क्या -क्या करेगा ?कल्पना के पंख उसे ग़रीबी से लड़ने की हिम्मत देते है ।अब्बाजान-अम्मीजान के आने की उम्मीद से वह प्रसन्न है ।हा मदकी इसी कल्पना पर प्रकाश डालते क वकहता है क-

“अब हा मदअपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजान रूपये कमाने गए हैं। बहुत-सी थै लयाँलेकर आयेंगे। अम्मीजान अल्लाह मयाँके घर से उसके लएबड़ी अच्छी-अच्छी चीजें लाने गयी हैं, इस लएहा मदप्रसन्न है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

आशा तो बड़ी चीज है, और फरबच्चों की आशा! उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है। हा मदके पाँव में जूते नहीं हैं, सरपर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है, फरभी वह प्रसन्न है। जब उसके अब्बाजान थै लयाँऔर अम्मीजान नियामतें लेकर आयेंगी, तो वह दिल से अरमान निकाल लेगा। "

ईद के दिन चारों ओर प्रसन्नता पूर्ण वातावरण छाया हुआ था ।ईद पर बच्चे बच्चे बूढ़े जवान सभी में चहल-पहल थी। सभी ईदगाह पर जाने की तैयारी कर रहे थे ।गाँव उल्लास वातावरण था ।बच्चे सबसे अ धकख़ुश थे ,उन्हें मेले में जाने के लएकाफ़ी उत्साह था ।नए-नए वस्त्र पहनने का , नए-नए खलौनेख़रीदने का चाव ,बच्चों के मन में ईदगाह पर सेवैया खाने की प्रसन्नता भी मचल चल रही थी ।ईद वातावरण का सजीव चत्रणईदगाह कहानी में प्रस्तुत कयागया है :-

"रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आयी है। कतनामनोहर, कतनासुहावना प्रभाव है। वृक्षों पर अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब ला लमाहै। आज का सूर्य देखो, कतना प्यारा, कतनाशीतल है, यानी संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कतनीहलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। कसीके कुरते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर में सुई-धागा लेने दौड़ा जा रहा है। कसीके जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लएतेली के घर पर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जायगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फरसैकड़ों आद मयोंसे मलनाःभेंटना, दोपहर के पहले लौटना असम्भव है। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं।

कसीने एक रोजा रखा है, वह भी दोपहर तक, कसीने वह भी नहीं, ले कनईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज है। रोजे बड़े-बूढ़ों के लएहोंगे। इनके लएतो ईद है। रोज ईद का नाम रटते थे, आज वह आ गयी। अब जल्दी पड़ी है कलोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। इन्हें गृहस्थी की चंताओंसे क्या प्रयोजन! सेवैयों के लएदूध ओर शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से, ये तो सेवेयाँ खायेंगे।"

बालक हा मदईद के आने पर काफ़ी उत्साहित है । दादी अमीना ईद को लेकर मन ही मन कोसती है क्यों क उसके पास त्योहार को मनाने के लएपैसा तो दूर की बात है ,अ पतुउसके पास अपने पोते हा मदके लएभी पैसे नहीं है। अमीना के पास आठ पैसे है ।वह आठ पैसों में क्या -क्या करें?बच्चे हामीद को उदास भी नहीं कर सकती ।हामीद की ख़ुशी के लएवह कुछ भी कर सकती है ।हा मदही उसके जीवन का एकमात्र सहारा है ।दादी अमीना ईद के त्योहार पर मन ही मन हिसाब कताबलगाते हुए कहती है :-

"माँगे का ही तो भरोसा ठहरा। उस दिन फहीमन के कपड़े सलेथे। आठ आने पैसे मलेथे। उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लएले कनकल ग्वालन सरपर सवार हो गयी तो क्या करती? हा मद के लएकुछ नहीं है, तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही। अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हा मदकी जेब में, पाँच अमीना के बटवे में। यही तो बिसात है और ईद का त्यौहार, अल्लाह ही बेड़ा पार लगावे। "

बालक हा मदगरीब है ।समझदार और परिपक्व व्यवहार से वह ववेकसे कार्य करता है ।जब दादी अमीना उसे मेले में ख़र्च करने के लएतीन पैसे देती है तो बालक हा मदमेले में जा कर अपने सा थयोंको कभी खलौनोंकी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

दुकान से खलौनेख़रीदते देखता है ,तो कभी मठाईकी दुकान से मठाईलेते हुए देखता है ।उसका भी मन करता करता है कवह भी खलौनेले और खलौनोंसे खेले इसी प्रकार मठाईका स्वाद भी लेना चाहता है ,ले कनवह अपनी स्थिति से अच्छी तरह वा क़फ़है ।उसे पता है कउनके घर की स्थिति अत्यंत दयनीय है इस लएवह अपनी मन की इच्छाओं का दमन कर लेता है और अपने मन को समझाता है क खलौनेख़रीदने से क्या फ़ायदा फ़ायदा ? ये खलौनेजल्द ही टूट जाएंगे !इसी प्रकार से जीभ के स्वाद का क्या , क्यों क मठाइयांस्वास्थ्य के लए लएभी अच्छी नहीं होती और यह बीमारियों का घर होती है ।इस प्रकार वह अपने मन को स्वयं ही सांत्वना दे रहा है और अपने पैसों को बचाने का प्रयास कर रहा है ।जब वह कुछ आगे जाता है तो उसे लौहे की दुकान दिखाई देती है ।वह उस दुकान में चला जाता है ।लौहे की दुकान पर जाकर वह चमटेको बड़ी ही जिज्ञासा और उत्साह से से देखता है ।यद्य पदुकानदार उसे आगे चलने के लएकहता है क्यों कदुकानदार को भी लगता है कयह बच्चा है ,बच्चे या तो खलौनेख़रीदते हैं या मठाई! जब दुकानदार बालक हा मदको आगे चलने के लएकहता है तो बालक हा मददुकानदार से कहता है कक्या इस दुकान का सामान बेचने के लएनहीं है ।दुकानदार से बालक हा मदतोल- भाव करता है। प्रारम्भ में दुकानदार द्वारा चमटेका रेट ज़्यादा बताया जाता है ।ले कनबालक हा मददुकानदार को अपनी बु द्धमत्तासे तीन आने में चमटा देने के लएराज़ी कर लेता है।

“दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा- तुम्हारे काम का नहीं है जी!

'बिकाऊ है कनहीं?'

'बिकाऊ क्यों नहीं है? और यहाँ क्यों लाद लाये हैं?'

तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है?'

'छ: पैसे लगेंगे।'

हा मदका दिल बैठ गया।

'ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो लो, नहीं चलते बनो।'

हा मदने कलेजा मजबूत करके कहा- तीन पैसे लोगे?

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कदुकानदार की घुड़ कयाँन सुने। ले कनदुकानदार ने घुड़ कयाँनहीं दी। बुलाकर चमटादे दिया।”

बाल हा मदअत्यंत संतोषी स्वभाव का बालक है ।मेले में बच्चे तरह -तरह के झूले झूलते हैं ,तरह- तरह के खलौनेख़रीदते हैं, तरह -तरह की मठाइयांखाते हैं, यहाँ तक कउसका मज़ाक भी उड़ाते हैं !ले कनबालक हा मद हा मद उनकी परवाह नहीं करता ।वह अपनी दादी माँ के लएलोहे का चमटाख़रीदना चाहता है इस लएवह अपने अपने मन को मसोस कर रह जाता है ।जब बच्चे चमटाखरीदने पर बालक हा मदका मज़ाक उड़ाते हैं तो वह बच्चों से तर्क - वतर्ककरता है ।बालक हा मदके तर्क वतर्कसे बच्चे यह स्वीकार करने पर मजबूर हो जाते हैं क कउनके खलौनेपर खर्च कएगए पैसे बेकार है , मठाइयांभी उनके स्वास्थ्य के लएअच्छी नहीं है ,इसी प्रकार से प्रकार से झूले झूल कर भी पैसे बेकार चले गए ।सभी बच्चे स्वीकार कर लेते हैं बालक हा मदद्वारा ख़रीदा गया

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

लोहे का चमटाउत्तमोत्तम है ।सभी बच्चे अपने -अपने खलौनेको अच्छा बता रहे है ।बच्चों में खलौनेको शास्त्रार्थ छिड़ गया ।सभी अपनी -अपनी दलीलें प्रस्तुत करने लगे ।

"अब बालकों के दो दल हो गये हैं। मोह सऩ महमूद, सम्मी और नूरे एक तरफ हैं, हा मदअकेला दूसरी तरफ। शास्त्रार्थ हो रहा है। सम्मी तो वधर्मीहो गया! दूसरे पक्ष से जा मल़ा ले कनमोह सऩ महमूद और नूरे भी हा मद से एक-एक, दो-दो साल बड़े होने पर भी हा मदके आघातों से आतं कतहो उठे हैं। उसके पास न्याय का बल है और नीति की शक्ति। एक ओर म है, दूसरी ओर लोहा, जो इस वक्त अपने को फौलाद कह रहा है। वह अजेय है, घातक है। अगर कोई शेर आ जाय तो मयाँ भश्तीके छक्के छूट जायँ, मयाँ सपाही म की बंदूक छोड़कर भागें, वकील साहब की नानी मर जाय, चोगे में मुँह छिपाकर जमीन पर लेट जायँ। मगर यह चमटा यह बहादुर, यह रूस्तमे-हिंद लपककर शेर की गरदन पर सवार हो जायगा और उसकी आँखें निकाल लेगा"

बालक हा मदअत्यंत समझदार है जब बच्चे अपने -अपने खलौनोंको लेकर शास्त्रार्थ करते हैं और सभी बच्चे एक दल में सम्मि लतहोकर बालक हा मदको परास्त करने की को शशकरते हैं तब बालक हा मदअपने तर्क वतर्कसे उन्हें परास्त कर देता है और उन्हें समझा देता है कउसका चमटाउनके खलौनोंसे बेहतर है । चमटा ख़रीदने पर सभी साथी जो उसका मज़ाक उड़ा रहे थे वो सभी उसके तर्क- वतर्कसे सहमत होकर उसे अपने खलौनेदिखाने के लएभी तैयार हो जाते हैं !इतना ही नहीं वह अपने चीमटे को 'रुस्तमे हिंद 'का नाम देता है । बालक हा मदने अपनी बु द्धमानीसे और तर्क शक्ति से सभी बच्चों के समक्ष अपने साधारण चमटेको 'रुस्तमे हिंद 'कहकर उसे सर्वश्रेष्ठ सद्ध कयाऔर सभी बच्चों को अपने रंग में रंग लया।

"हा मदने मैदान मार लया।उसका चमटारूस्तमे-हिन्द है। अब इसमें मोह सऩ महमूद नूरे, सम्मी कसीको भी आपत्ति नहीं हो सकती।

वजेताको हारनेवालों से जो सत्कार मलनास्वाभ वकहै, वह हा मदको भी मला।औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च कए पर कोई काम की चीज न ले सके। हा मदने तीन पैसे में रंग जमा लया।सच ही तो है, खलौनों का क्या भरोसा? टूट-फूट जायँगे। हा मदका चमटातो बना रहेगा बरसों?

सं धकी शर्तें तय होने लगीं। मोह सनने कहा- जरा अपना चमटादो, हम भी देखें। तुम हमारा भश्तीलेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खलौनेपेश कये।'

बालक हा मदकी परवरिश बड़ी अच्छी हुई हैं ।छोटे बच्चे अपने बारे में सोचते हैं । बालक हा मदजब खलौनोंकी की दुकान पर जाता है तो वह खलौनेनहीं ख़रीदता ।इसी प्रकार से जब दूसरे बच्चे अपने लए मठाईख़रीदते हैं तब वह अपने लए मठाईभी नहीं ख़रीदता और न ही झूलों को देखकर लालायित होकर झूले झूलता है क्यों क उसके बालमन में उसकी दादी की तस्वीर बसी हुई है ।उसे पता है कजब उसकी दादी उसके लएगरम गरम खाना पकाती है ,तब तवे से रोटियां उतारते हुए उसकी दादी की उँग लयाँजल जाती है । बालक हा मदके मन में अपनी दादी के लएप्रेम-भाव और चन्ताहै। वह अपने लए खलौनेनहीं ख़रीदता अ पतुदादी अमीना के लए

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

चमटाख़रीदने की सोचता है ।वास्तव में ये उसके संस्कार ही तो है जो उसे अपनी ख़ुशी से पहले परिवार की देखभाल के लएप्रेरित करती है ।यथा:-

“अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कदोपहर हुआ, कुछ खाया न पया।लाया क्या, चमटा 'सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मली, जो यह लोहे का चमटाउठा लाया।

हा मदने अपराधी भाव से कहा-तुम्हारी उँग लयाँतवे से जल जाती थीं, इस लएमैने इसे लया।’

हर बच्चे के मन में होता है कदूसरे उसकी तारीफ़ करें ।हा मदभी एक ऐसा ही बच्चा है जिसके मन में है क उसकी दादी माँ उसकी तारीफ़ करें। इस लएजब वह ईदगाह के मेले में जाता है और मेले में खलौनोंको देखता है , मठाइयोंको देखता है और झूलों को देखता है तो उसका भी मन होता है कवह मठाइयांखाएं , खलौनेख़रीदें और झुला झूले ।ले कनवह अपने घर की आ र्थकस्थिति से अच्छी तरह वा क़फ़हैं ।इस लएवह अपने पैसों को बचाकर -सम्हाल कर रखता है ।वह इन तीन पैसों से अपनी दादी के लए चमटाख़रीदना चाहता है ।उसका बालमन चाहता है कजब वह दादी के लएही चमटाख़रीद कर ले जाएँ तो दादी सबके समक्ष से उसकी तारीफ़ करें , उसे गले से लगाएँ और उसे ढेर सारा प्यार करें । उसे आशीर्वाद -आशीष भी दे ।

“अम्माँ चमटादेखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी-मेरा बच्चा अम्माँ के लए चमटालाया है। कतना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खलौनेपर कौन इन्हें दुआयें देगा? बड़ों की दुआयें सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं, और तुरंत सुनी जाती हैं।”

बालक हा मदभी अपनी प्रशंसा से ख़ुश होने वाला बच्चा है और यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कबच्चा अपनी प्रशंसा से ख़ुश होता है । बालक हा मदअपनी प्रशंसा के लएऔर दादी की पीड़ा से द्र वतहोकर चमटाख़रीदता है ।हाथ जलने से दादी को जो तक़लीफ होती है उसे दूर करने की सोचकर वह मेले से लोहे का च ख़रीद कर लाता है ।बालक हा मदकी सोच बड़ी ही उच्च कोटि की है ।मेले में बच्चे अपने खलौनेदिखा दिखाकर उसे चढ़ातेहै और उसे मठाईखाने के लएनहीं देते। यहाँ तक कमोह सनबच्चा उसे रेवड़ी दिखाकर चढ़ाताहै

“मोह सनकहता है- हा मदरेवड़ी ले जा, कतनीखुशबूदार है!

हा मदको संदेह हुआ, ये केवल क्रूर वनोदहै, मोह सनइतना उदार नहीं है, ले कनयह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मोह सनदोने से एक रेवड़ी निकालकर हा मदकी ओर बढ़ाता है। हा मदहाथ फैलाता है। मोह सनरेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद, नूरे और सम्मी खूब ता लयाँबजा-बजाकर हँसते हैं। “

बालक हा मदबच्चों द्वारा उसका मज़ाक़ उड़ाने पर भी यह नहीं सोचता कवह उनके साथ ग़लत करेगा अ पतुवह सोचता है की जब उसके अब्बाजान और अम्मीजान शहर से ढेर सारे रुपये कमाकर रुपये की थैली लेकर आएंगे तब वह उनको ढेर सारे खलौनेख़रीद कर देगा । उन्हें दिखा देगा कदोस्ती क्या होती है ?दोस्ती में कैसे दिया जाता है ?दोस्ती में उपेक्षा और तिरस्कार नहीं होता । दोस्ती में दिया जाता है-प्यार कयाजाता है । बालक हा मद की यह सोच वास्तव में उसकी उच्च मान सकताको दर्शाती है । बच्चों द्वारा बालक हा मदका मज़ाक उड़ाए जाने पर भी वह यहीं सोचता है कवह अपने अब्बाजान और अम्मीजान आने पर उनके लएढेर सारे खलौने ख़रीदेगा और उन्हें थैले भर -भरकर रुपये देगा ।वास्तव में बालक हा मदकी सोच प्रशंसनीय हैं ।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

"आ खरअब्बाजान कभीं न कभी आयेंगे। अम्मा भी आयेंगी ही। फरइन लोगों से पूछूँगा, कतने खलौनेलोगे? एक-एक को टोकरियों खलौनेदूँ और दिखा दूँ कदोस्तों के साथ इस तरह का सलूक कयाजाता है।"

बालक हा मदके घर के हालात ने ,उसकी आ र्थकतंगी ने उसे वक़्त से पहले परिपक्व और समझदार बना दिया था ।इसका अर्थ यह कदा पनहीं है कउस बाल मन में खलौनेके प्रति आकर्षण नहीं था या मठाइयांखाने की इच्छा नहीं थी । उसका बाल मन भी इन सब चीज़ों के प्रति आक र्षतहोता है ,यहीं कारण है कजब वह अपने सा थयोंकी टोली को अपने लोहे के चमटेको रुस्तमे हिन्दी कहकर चमटे की तरफ़ सबको आक र्षतकर लेता है ।तब सभी लड़कों को बारी -बारी अपना चमटादिखाता है और उनके खलौनालेकर खेलता है।अपनी दादी को वह बहुत प्यार करता है ।इस लएमेले के लएप्राप्त तीन आने खलौने, मठाईऔर झूले पर न ख़र्च कर दादी के लएख़र्च करता है ।

यथा:-"बच्चे में कतनात्याग, कतनासद्भाव और कतना ववेकहै! दूसरों को खलौनेलेते और मठाईखाते देखकर इसका मन कतनालललचाया होगा? इतना जब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद् हो गया।"

बच्चों की अपनी ही एक दुनियाँ होती हैं वो अपने ही एक संसार में वचरतेहैं ।उन्हें समाज से कुछ भी लेना देना नहीं !यहीं कारण है कजब ईद का त्योहार आता है तो दादी अमीना ईद को अपनी आ र्थकतंगी के कारण कोसती है ।वह मन ही मन भी सोचती है कउसके पास मात्र आठ आने है। मैं आठ आनों से क्या- क्या करूँगी । इतना ही नहीं उसे यह भी चंताहै कयदि वह ईद मेलें में बाल हा मद के साथ जाती है तो घर का काम कौन सँभालेगा ।हा मदके पास कपड़े नहीं है ,न ही उसके पास में मेले में ख़र्च करने के लएपैसे हैं ,नहीं जूते हैं और न ही उसके साथ जाने के लएउसके अब्बाजान -अम्मीजान या परिवार के अन्य सदस्य हैं ।बालक हा मदके मन में तो बस ईद के मेले पर जाने के लएएक उत्साह है और वह अपनी ग़रीबी के लएतनिक भी नहीं सोचता और न ही पैसों के बारे में भी चाहता है। बस उसके मन में तो ईदगाह का मेला देखने की जिज्ञासा है ।शहर को देखने की ललक है ।ईदगाह के मेले को पर जाने की सोच से ही वह आनंदित है ।

वास्तव में बालक दिल के साफ़ -सच्चे होते हैं ।दुनियादारी से दूर होते हैं ।बालक हा मदइसका साक्षात उदाहरण है वह अपनी ही कल्पनाओं की दुनिया में रहता है ।

"आशा तो बड़ी चीज है, और फरबच्चों की आशा! उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है। हा मदके पाँव में जूते नहीं हैं, सरपर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है, फरभी वह प्रसन्न है"

बालक हा मदअत्यंत भोला है उसे नहीं पता कउसके अब्बाजान-अम्मीजान इस दुनिया में नहीं है ।दादी अमीना ही उसके जीवन का एक मात्र सहारा है ।दादी ने बालक को समझा रखा है कउसके अब्बाजान शहर ढेर सारे रूपये कमाने गए है और अम्मीजान अल्लाह के घर से हा मदके लएसुन्दर-सुन्दर वस्तुएँ लाने गई है ।उस मासूम को नहीं पता कवह अनाथ है ।बालक हा मदअत्यंत भोला है उसे नहीं पता कउसके अब्बाजान-अम्मीजान इस दुनिया में नहीं है ।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

"वह चार-पाँच साल का गरीब- सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गयी। कसीको पता क्या बीमारी है। कहती तो कौन सुनने वाला था? दिल पर जो कुछ बीतती थी, वह दिल में ही सहती थी ओर जब न सहा गया तो संसार से वदाहो गयी। अब हा मद अपनी बूढी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजान रूपये कमाने गए हैं। बहुत-सी थै लयाँलेकर आयेंगे। अम्मीजान अल्लाह मयाँके घर से उसके लएबड़ी अच्छी-अच्छी चीजें लाने गयी हैं, इस लएहा मदप्रसन्न है।"

बालमन हा मदके मन में खलौनोंके प्रति भी आकर्षण था और वह मठाइयांभी खाना चाहता था ले कनअपने घर की आ र्थकतंगी के कारण और वक़्त की नजाकत को समझते वह अपने मन को मारता है, मन को मसोस कर रह जाता है ।वह अपनी चंचल वृत्तियों पर नियंत्रण करना जाता है।वह मेले में अपने लएतीन आने ख़र्च नहीं करता अ पतुउन पैसों का सदुपयोग कर अपनी दादी के लए चमटाख़रीदता है।हा मदकी परिपक्वता से दादी भाव वह्वलहो जाती है। दादी का सारा ग़ुस्सा काफ़ूर हो जाता है ।वह हा मदके गले लगकर फूट-फूट कर रोने लगती है उस वक़्त के दृश्य का लेखक ने अत्यंत भावुक चत्रखींचा है:-

"बच्चे हा मदने बूढ़े हा मदका पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बा लकाअमीना बन गयी। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हा मदको दुआएं देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गरातीजाती थी। हा मदइसका रहस्य क्या समझता!"

हा मदअत्यंत स्वा भमानीऔर उदार व्यक्तित्व का धनी हैं । वह ग़रीब ज़रूर है ले कनवह अपनी ग़रीबी से कभी भी अपने स्वा भमानके साथ समझौता नहीं करता है ।यहीं कारण है कमेले में जब बच्चे तरह तरह के खलौनेदिखाकर उसका मज़ाक उड़ा रहे थे ,उसे मठाईदिखा दिखाकर चढ़ारहे थे ।तब वह अ स्वा भमानीप्रवृत्ति को दर्शाता है ।वह न उनसे खलौनेमाँगता है और न ही मठाईखाने को माँगता है अ पतुवह स्वा भमानके साथ दलील देता है कउनके खलौने म कै हैं जो गरतेही टूट जाएंगे ।इसी प्रकार कताबोंमें मठाईकी अनेकों दुष्परिणाम लखेहै । मठाईखाने से शरीर रोगी होता है ।वह स्वा भमानीबच्चा है और उसके स्वा भमानपर प्रकाश डालते हुए लेखक लखतेहैं क

"मेरे पास पैसे नहीं हैं।तभी तो मोह सनऔर महमूद यों मजाजदिखाते हैं। मैं भी इनसे मजाजदिखाऊँगा। खेलें खलौनेऔर खायें मठाइयाँ।मै नहीं खेलता खलौने, कसीका मजाजक्यों सहूँ? मैं गरीब सही, कसीसे कुछ माँगने तो नहीं जाता।"

हा मदके साथी जब हा मदका मज़ाक उड़ाते हैं तब हा मदश र्मंदगीअनुभव नहीं करता अ पतुवह उनको मुँह तोड़ जवाब देता है ।अपने दोस्तों को अपनी ग़रीबी पर हावी नहीं होने देता।

"खायें मठाइयाँ, आप मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुन्सियाँ निकलेंगी, आप ही जबान चटोरी हो जायगी। "

इसी प्रकार अन्यत्र स्थल पर मठाईखाने के बुरे प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए कहता है क:-

हा मद मठाईकौन बड़ी नेमत है। कताबमें इसकी कतनीबुराइयाँ लखीहैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

इस प्रकार ईदगाह कहानी के कथानक में मुंशी प्रेमचंद ने बाल-मनो वज्ञानकी गहराइयों का स्पर्श कर बालक हा मदके चरित्र में व भन्नाभावात्मक रंग भर कर ईदगाह कहानी के उद्देश्य को अ भव्यक्तिप्रदान की है ।बालक हा मद अनाथ है कन्तु समझदार ,धैर्यशील,भावुक,कल्पनाशील,बु द्धमान,स्वा भमानी,निडर और ववेकशील है। यदि ये कहा जाए क मुंशी चंद की कहानी ईदगाह के उद्देश्य को सार्थकता बालक हा मदके चरित्र के माध्यम से प्राप्त होती है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है ।निस्संदेह बालक हा मदईदगाह कहानी का प्रमुख पात्र हैं और यहीं कहानी के उद्देश्य को सार्थकता प्रदान करता है।

डॉ कामना कौ शक
सह-प्रवक्ता हिन्दी
वैश्य महा वद्यालय भवानी

सन्दर्भ सूची :-

(1)कथाक्रम:संपादक-डॉ रोहिणी अग्रवाल 'ईदगाह:-मुंशी प्रेमचंद' खाटू श्याम प्रकाशन पृष्ठ 35
(2) वहीं पृष्ठ:-34
(3)वहीं पृष्ठ:-33
(4)वहीं पृष्ठ:-35
(5)वहीं पृष्ठ:-42
(6)वहीं पृष्ठ:-43
(7)वहीं पृष्ठ:-45
(8)वहीं पृष्ठ:-48
(9)वहीं पृष्ठ:-42
(10)वहीं पृष्ठ:-40
(11)वहीं पृष्ठ:-42
(12)वहीं पृष्ठ:-48
(13)वहीं पृष्ठ:-34
(14)वहीं पृष्ठ:-34
(15)वहीं पृष्ठ:-34
(16)वहीं पृष्ठ:-48
(17)वहीं पृष्ठ:-42
(18)वहीं पृष्ठ:-41
(19)वहीं पृष्ठ:-41